''निर्गमन और सिन्धी हिन्दुओं का पुर्नस्थापन (अजमेर जिले के सन्दर्भ में)'

"Exodus and Resettlement of Sindhi Hindus (Special Reference to Ajmer District)''

Research Scholar Name : BHUMIKA GOVINDANI NEE RAJKUMARI
Research Guide Name : DR. AJAY KUMAR SHARMA
S.P.C. GOVT. COLLEGE, AJMER

षोध पत्र के उद्देष्य

- भारत विभाजन का सिंधी समुदाय पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करना।
- सिंधी हिंदुओं को कौनसे कारणों से अपनी मातृभूमि को त्यागना पड़ा, इसका भी विश्लेषण किया गया।
- युवा पीढ़ी के सिंधी समुदाय के दुख दर्द से अवगत करना ताकि वह उसे जान पाए।
- सिंधी हिंदुओं के अजमेर में पूर्वस्थापन के कारणों का विश्लेषण किया गया।

अध्ययन तकनीक

(1) अध्ययन के निर्धारित उद्देष्यों के अनुसार प्राथमिक और द्वितीयक आँकड़ों का संकलन, सम्पादन किया गया है।

(2) तुलनात्मक आर्थिक बदलाव, सामाजिक बदलाव, राजनीतिक क्षेत्र के अध्ययन के लिए प्रष्नावली तैयार कर षोधकर्ता द्वारा प्रतिदर्ष के आधार पर परिवारों में पहुँच कर पूर्ण की गई।

(3) षोध प्रपत्र को अधिक स्पष्ट करने हेतु मानचित्र और अन्य छायाचित्रों का भी प्रयोग किया गया है।

(4) सूचनाएँ एकत्रित करने हेतु षोध लेख, समाचार पत्र, वेब साइट, साक्षात्कार विधि को भी उचित स्थान देने का प्रयास किया गया है।

विभाजन की प्रक्रिया

भारत के विभाजन के ढाँचे को '3 जून, प्लान' या माउण्ट बैटन योजना का नाम दिया गया। भारत और पाकिस्तान की बीच की सीमारेखा लंदन के वकील सर सिरिल रैडक्लिफ ने तय की।हिन्दु बहुमत वाले इलाके भारत में और मुस्लिम बहुमत वाले इलाके पाकिस्तान में षामिल किये गये। 18 जुलाई 1947 को ब्रिटिष संसद ने 'भारतीय स्वतन्त्रता अधिनियम' पारित किया जिसमें विभाजन की प्रक्रिया को अन्तिम रूप दिया गया। अधिकतर राज्यों ने बहुमत धर्म के आधार पर देष चुना। विभाजन के बाद पाकिस्तान को संयुक्त राष्ट्र में नए सदस्य के रूप में षामिल किया गया और भारत ने ब्रिटिष भारत की कुर्सी संभाली।

विभाजन के दौरान बंगाल प्रान्त का पूर्वी भाग पाकिस्तान में तथा पष्चिमी बंगाल भारत में रहा, उसी तरह पंजाब का पष्चिमी भाग पष्चिमी पाकिस्तान तथा पूर्वी भाग वर्तमान पंजाब बना। सिन्ध तो पूर्ण रूप से पाकिस्तान में सम्मिलित कर दिया गया। यह विभाजन सिर्फ भौतिक रूप से नहीं था बल्कि विभिन्न सम्पत्तियों जैसे सेना, भारतीय सिविल सेवा और अन्य प्रषासनिक सेवाएँ, रेल्वे तथा केन्द्रीय खजाने का भी विभाजन हुआ।

UNHCR (United Nation High Commissioner For Refugees) अनुसार लगभग 14 लाख हिन्दू सिन्धी, सिख, मुस्लिम विभाजन के दौरान प्रवासित हुए। यह अब तक के इतिहास का सबसे बड़ा मानव सामूहिक प्रवासन है। 1947 का वर्ष विषेषकर सिन्धियों के लिए मिश्रित भावना लाया क्योंकि उनके लिए स्वतंत्रता का अर्थ कुछ भी नहीं था।

जब सारा भारत स्वतन्त्रता दिवस मना रहा था तब पंजाब, सिन्ध और बंगाल के लोग अपनी मातृभूमि से अलग होने का आघात झेल रहे थे। पंजाबी लोगों का प्रवासन तो पष्चिम से पूर्वी पंजाब में हुआ तथा बंगाली लोग पूर्व से पष्चिमी बंगाल में प्रवासित हुए। लेकिन सिन्धी हिन्दु प्रवासित होकर कहा जाये यह अपरिभाषित सा था। एक ऐतिहासिक निर्णय ने उन्हें सिन्धियों को विस्थापितों में परिवर्तित कर दिया। 15 अगस्त 1947 की सुबह जब सारा देष स्वतन्त्रता के साथ उठा तब सिन्धी लोगों ने अपने आपको मातृभूमि रहित, निराश्रित और राज्य रहित पाया

सिन्ध का परिचय

सिन्ध भारत के उत्तर–पष्चिमी भाग में स्थित है। यह पाकिस्तान के चार बड़े प्रान्तों में से एक है जो कि पाकिस्तान के दक्षिणी भाग में स्थित है। यह सिन्धियों की ऐतिहासिक भूमि है जिसे स्थानीय भाषा में 'मेहरान' कहा जाता है जिसका अर्थ है Rain of Kindness/ kindness इसके अलावा पाकिस्तान की निचली घाटियों को भी स्थानीय भाषा में 'मेहरान' कहा जाता है। सिन्ध क्षेत्रफल के आधार पर पाकिस्तान का तीसरा बड़ा प्रान्त हैं प्रथम स्थान पर बलुचिस्तान तथा द्वितीय स्थान पर पंजाब है। 2011 के आँकड़ों के अनुसार सिन्ध का क्षेत्रफल 1,40,914 वर्ग किमी. है (54,407 मी.^{2}) यहाँ की जनसंख्या 55,245,497 है तथा जनसंख्या घनत्व 310 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. है। विभाजन से पूर्व 1947 में सिन्ध की जनसंख्या 14,00,000 थी। 1950 में लगभग 12,25,000 सिन्धी हिन्दुओं ने सिन्ध छोड़ा और भारत और दुनिया के अन्य भागों में चले गये।

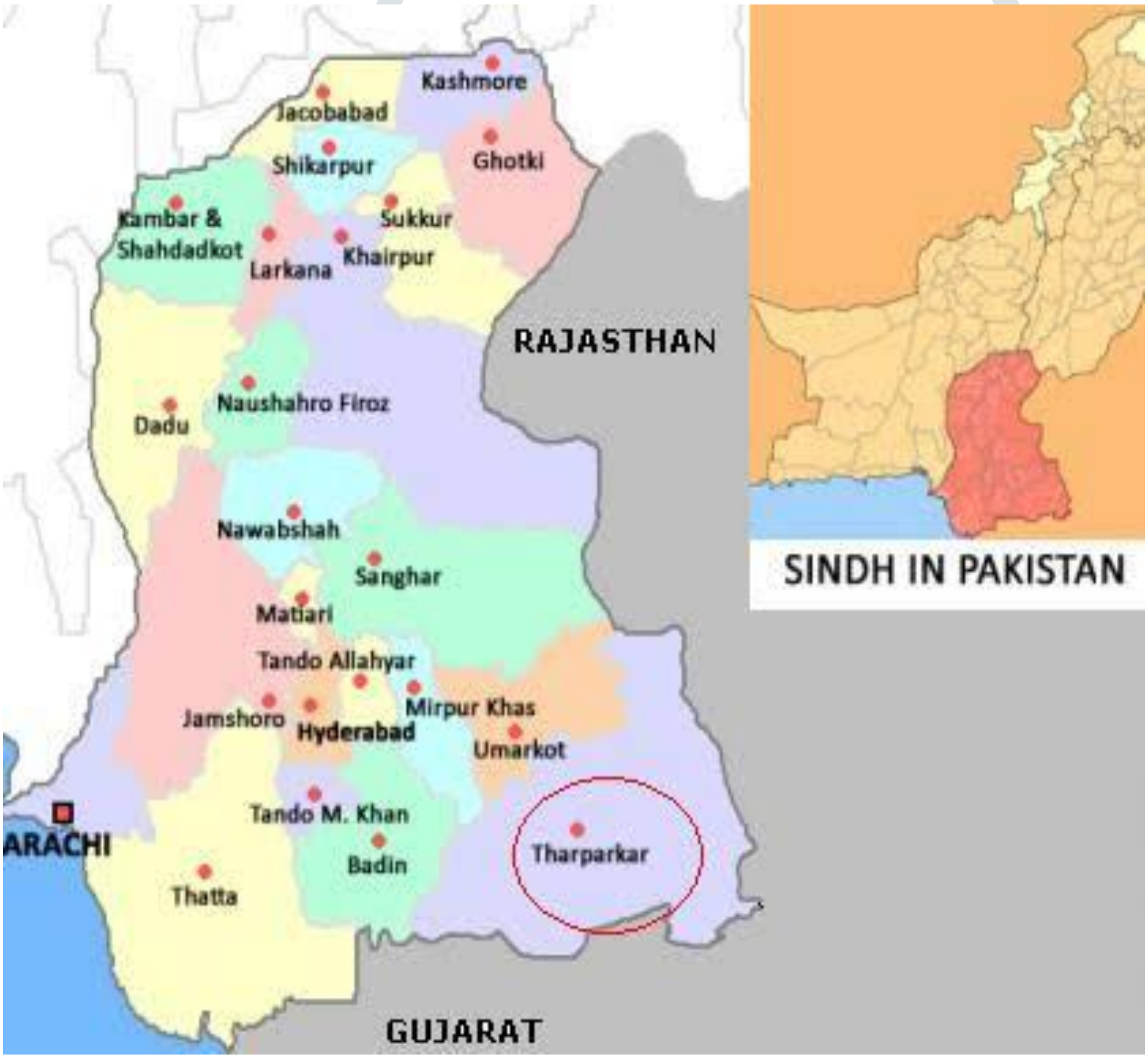

भारत में पुनर्वासन

- मध्य भारत में – मध्य प्रदेष, बैरागढ़ मध्य भारत, हैदराबाद भोपाल तथा विन्ध्य प्रदेष में बसाव था। उत्तरी पष्चिमी भारत में – राजस्थान, पंजाब, पेपसु अजमेर, दिल्ली, बिलासपुर, हिमाचल प्रदेष में रहा। दक्षिणी भारत में –

हैदराबाद (सिकन्दराबाद) मद्रास, मैसूर, कोचीन तथा कुर्वा और बैंगलोर में कोक्स टाऊन में आकर बसे। पूर्वी भारत में – बिहार, उड़ीसा, प. बंगाल, चन्द्रनागौर में प्रवासित हुए उत्तरी भारत में – उत्तर प्रदेष में आकर बसे।

- बॉम्बे के बाद राजस्थान पुनर्वासन के लिए सिन्धियों की दूसरी पसन्द रहा। क्योकि जोधपुर रेल्वे के द्वारा यात्रियों को हैदराबाद (सिन्ध) और मीरपुर खास से पाली और मारवाड़ छोड़ा। जहां से विस्थापितो को अजमेर, जोधपुर, उदयपुर, जयपुर और अलवर मेरवाड़ा, देवली कैम्प में भेज दिया गया।

अजमेर में पुनर्वासन

विभाजन के दौरान जब सिन्धी प्रवासित होकर आये तो बॉम्बे के बाद राजस्थान में ज्यादातर सिन्धी हिन्दू आकर बसे। राजस्थान में भी मुख्य रूप से जोधपुर, उदयपुर, जयपुर, अलवर, अजमेर, मेरवाड़ा, देवली क्षेत्र प्रमुख थे। 1951 के जनसंख्या आँकड़ों के अनुसार उस समय अजमेर की कुल सिन्धी जनसंख्या 41,914 थी जिसमें 25,029 पुरूष तथा 21,885 महिलाएँ थी। दैनिक भास्कर के 8 अप्रेल, 2016 षुक्रवार को प्रकाषित लेख के अनुसार 2016 तक अजमेर क्षेत्र में सिन्धी समाज की जनसंख्या 1.75 लाख है।

षिविर जनसंख्या (Camp Population)

क्रम सं.	राज्य (State)	जनसंख्या (Population)
1.	अजमेर मेरवाड़ा देवली	10,200
2.	बाम्बे	2,16,500
3.	बीकानेर राज्य	8,900
4.	जयपुर राज्य	33,200
5.	जोधपुर राज्य	11,800
6.	मध्य भारत	3,400
7.	राजस्थान	15,800
8.	सौराष्ट्र संघ	45,500
9.	बडौदा	10,700
10.	विन्ध्य प्रदेष	15,400
11.	मध्य प्रदेष	21,400
	कुल (Total)	4,52,800

- सिन्धियों के द्वारा लगाए गए कैम्प की कुल जनसंख्या आंकड़े (1948) के अनुसार 4,52,800 थी तथा अजमेर मेरवाड़ा देवली में इनकी संख्या 10,200 थी अजमेर मे सिन्धियों के लिए कैम्प मुख्यतः नसीराबाद छावनी, अजमेर परकोटा क्षेत्र (आशा गंज, पड़ाव, दिल्ली गेट, अगर गेट, ऊसरी गेट) में लगाए गए।

षिविर जनसंख्या आंकड़ो से दो तथ्य सामने आते है :–

1. एक तो यह कि वह सभी जिन्होंने सिंध छोड़ा सभी शिविर में नहीं रहे। उनमें से कई लोग अपने रिश्तेदारों के घर या फिर उन्होंने स्वयं के घर ले लिए थे।

2. सिंध से लगभग 12 लाख सिंधी हिंदू भारत आए और आंकड़ों के अनुसार अजमेर मेरवाड़ा देवली कैम्प में 10,200 लोग रहे तथा कुल 4.5 लाख लोग शिविर में रहे। इसका कारण यह भी हो सकता है –

- (अ) कई सिंधी हिंदू दूसरे देशों में बस गए।
- (ब) विभाजन के दौरान मरने वाले सिंधी हिंदुओं की अपेक्षा, निराशा, सदमे, परेशानी से मरने वाले सिंधियों की संख्या ज्यादा थी।

सारणी–1

सिन्धियों का अपनी मातृभूमि छोड़ने के कारण

Reason which compelled the Sindhis to leave their Homeland

Random Sample – 70 persons
Age Group – 75-90 years

Sr.	Reasons	Yes	No	Do not know
1.	सिन्ध सरकार ने उन्हें सिन्ध छोड़ने के लिए प्रोत्साहित किया	53	13	4
2.	सिन्ध का प्रधान खुहरा, सिन्ध के लोगों में कोई आत्मविष्वास नहीं जगा पाया?	62	5	3
3.	सिन्धी मुसलमानों ने सिन्धी हिन्दुओं को सिन्ध छोड़ने की धमकी दी।	19	51	-
4.	प्रवासी मुसलमानों के सिन्धी हिन्दुओं के लिए संकट पैदा कर दिया था?	68	-	2
5.	सिन्धी हिन्दुओं का नेताओं पर से विष्वास उठ गया था?	59	5	6
6.	पाकिस्तान की केन्द्रीय सरकार ने सिन्धी हिन्दुओं की सुरक्षा का कोई आष्वासन नहीं दिया था?	66	2	2

सिन्धियों का अपनी मातृभूमि छोड़ने के कारण

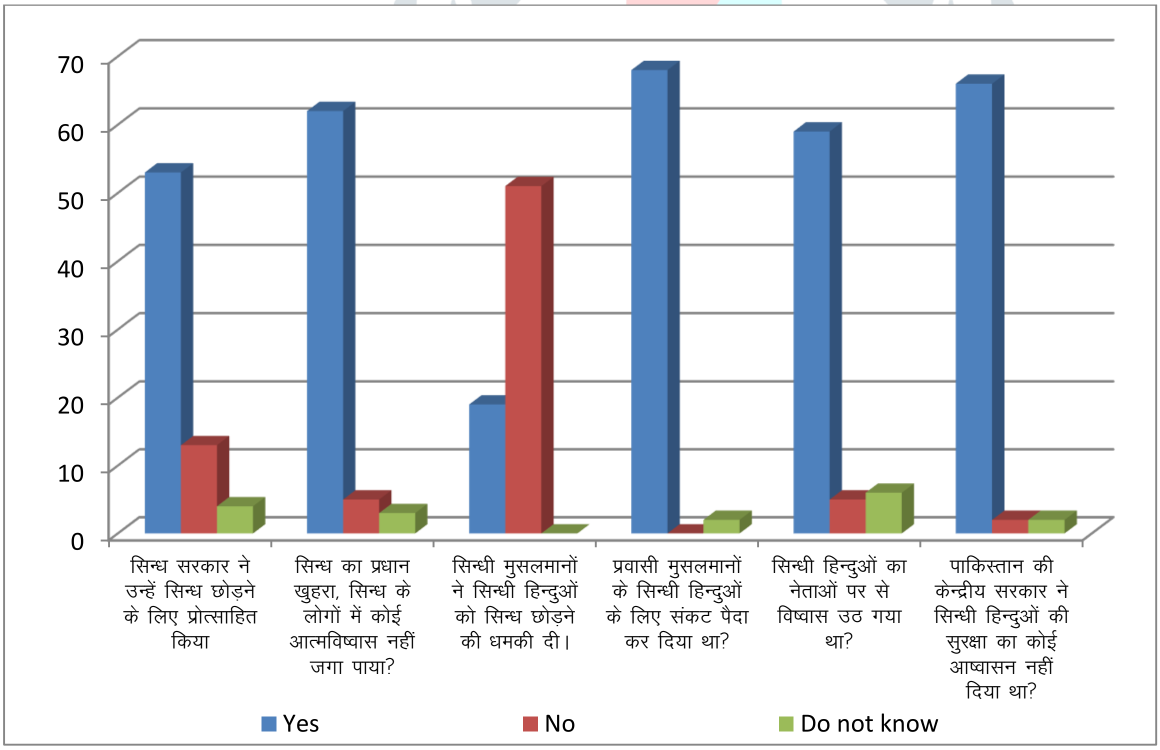

निष्कर्ष

जैसा की सारणी सं. 1 में किये गए सर्वेक्षण से ज्ञात होता है कि सिन्धी हिन्दुओ के साथ सिंध सरकार द्वारा उस समय दुर्व्यवहार किया गया था तथा हिन्दू नेताओ पर से भी उनका विष्वास उठ गया था। उस समय केंद्रीय पाकिस्तान सरकार ने भी उन्हें किसी तरह का आशवासन नही दिया।

सारणी–2

सिंधी हिन्दुओ का अजमेर में बसने के कारण

Reason which impelled Sindhis to prefer AJMER for settlement

Random Sample – 70 persons
Age Group – 75-90 years

Sr.	Reasons	Yes	No	Can not say
1.	पाकिस्तान से चली 'The King Train' ने सिन्धी हिन्दुओं को अजमेर छोड़ा?	65	4	1
2.	अजमेर में उनके रिष्तेदार और दोस्त थे?	10	60	-
3.	राजस्थान सरकार ने अजमेर में उनके लिए अच्छी व्यवस्था कर रखी थी?	12	56	2
4.	स्थानीय जनता ने सिन्धी हिन्दुओं का स्वागत किया?	8	62	-
5.	अनिष्चित था और अजमेर आने की कोई योजना नहीं थी।	55	10	5
6.	निष्चित रूप से अजमेर में ही बसना चाहते थे	10	55	5

सिंधी हिन्दुओ का अजमेर में बसने के कारण

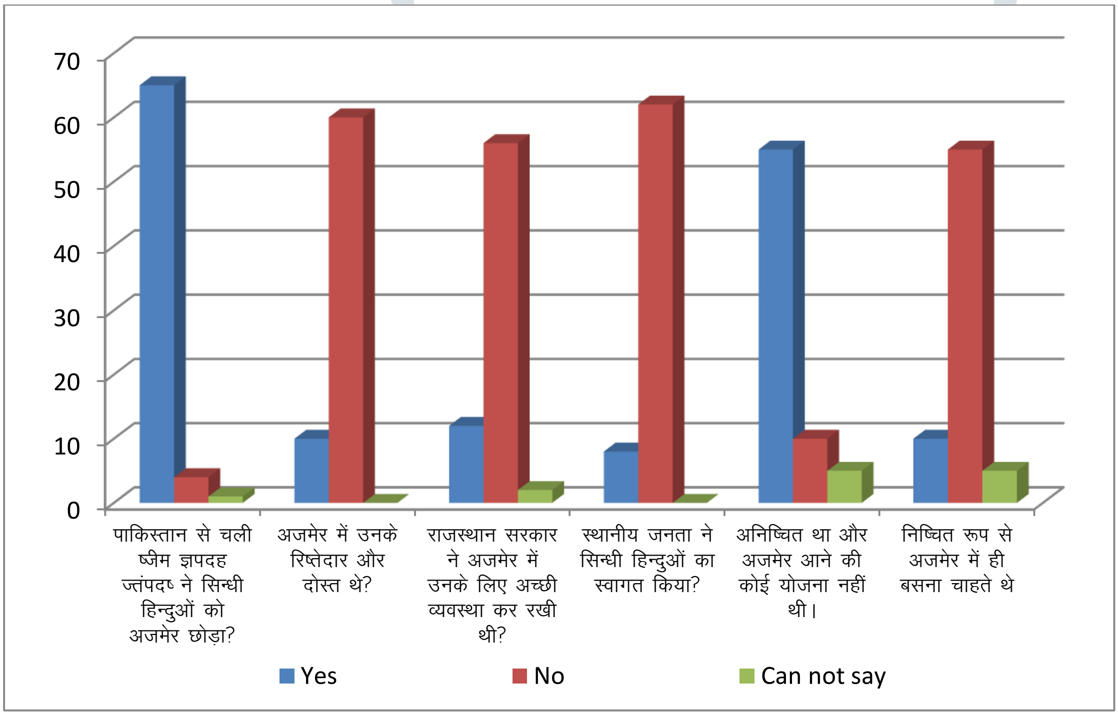

निष्कर्ष

- सारणी सं. 2 के सर्वेक्षण अनुसार सिंधी हिन्दू मुख्य चाहते थे परंतु बॉम्बे में विस्थापितों की संख्या काफी अधिक थी। अतः अतिरिक्त विस्थापितों को अन्य राज्यो में भेज दिया गया और यह बसने का अन्य कारण यह भी था की जोधपुर रेलवे के द्वारा यात्रियों को हैदराबाद (सिंध) और मीरपुर खास से पाली और मारवाड़ छोड़ा गया। जहां से भी विस्थापितों को 'अजमेर', जोधपुर, उदयपुर, जयपुर ओर अलवर भेज दिया गया। इस ट्रैन का नाम 'The King Train' था।

- जब अजमेर में ये लोग आकर बसे तब इनकी स्थिति बहुत ही दयनीय थी, परन्तु किसी भी काम को छोटा या हीन नहीं माना। साइकिल के पंक्चर बनाने से पापड़ बेचने तक का काम किया इस समाज के लोगों ने। इसलिए तो आज अजमेर में सौ करोड़ से ज्यादा के सिन्धी आसामियों की संख्या सौ से भी अधिक है।

• नरेन शाहनी भगत, महेन्द्र तिर्थाणी, जगदीष वच्छानी जैसे कई प्रमुख लोग सामाजिक सरोकारों की नई इबारते गढ़ने में लगे है। अजमेर में सिन्धी सैन्ट्रल पंचायत, पूज्य पारब्रह्म ट्रस्ट, हालाणी दरबार, सिन्धु समिति, जीव सेवा समिति, सुधार सभा, स्वामी बसंतराम दरबार, प्रेम प्रकाष आश्रम, आदर्ष नगर जैसे कई संगठन सेवा कर रहे है। षिक्षा के लिए 80 प्रतिषत तक फीस माफ की जाती है। चिकित्सा के क्षेत्र में तो इन संगठनों का बेहतरीन काम है, यूरोलॉजी का प्रसिद्ध कैम्प सिन्धी समाज के जीव सेवा समिति के सौजन्य से लगता है। दयाल वीना संस्थान में अजमेर के अन्य संस्थानों की तुलना में कम दर पर मेडिकल जांचें की जाती है।

पाकिस्तान (सिन्ध) में सिन्धी हिन्दुओ का दमन

• लकराना में बीबी आसिफा डेंटल कॉलेज की अंतिम वर्ष की छात्रा नमृता चंदानी सोमवार 17 सितंबर को अपने हॉस्टल के कमरे में मृत पाई गई। नमृता जो घोटकी के तालुका मीरपुर मधेलो की थी एक चारपाई पर उसकी गर्दन से बंधी रस्सी के साथ पड़ी मिली जबकि उसका कमरा अंदर से बंद था। स्थानीय पुलिस का कहना है कि नमृता चंदानी ने आत्महत्या की। हालांकि उसके परिवार का आरोप है कि चांदनी को इसलिए मार दिया गया क्योंकि वह अल्पसंख्यक थी। यह हत्या जबरन धर्म परिवर्तन को लेकर की गई है।

• पाकिस्तान के सिंध प्रांत में एक हिंदू लड़की का अपहरण किया गया और उसे मुस्लिम व्यक्ति से शादी करने के लिए मजबूर किया गया। इंडिया टुडे टीवी के सूत्रों के अनुसार पाकिस्तान में 1 सप्ताह के भीतर अल्पसंख्यक लड़की का यह दूसरा अपहरण और धर्मांतरण है। यह लड़की बीबीए की छात्रा है 29 अगस्त को यह कॉलेज के लिए निकली थी और घर नहीं लौटी। मीडिया रिपोर्ट में कहा गया कि लड़की का जबरन उसके सहपाठी बाबर अमन ने मिर्जा दिलावर बैग के साथ अपहरण कर लिया जो पाकिस्तान तहरीक–ए–इंसाफ (P.T.I.) का सदस्य है और जबरन शादी कर धर्म परिवर्तन करने के लिए मजबूर किया।

• इसी प्रकार सिंध में एक हिंदू शिक्षक पर भी भीड़ में हमला किया गया तथा मंदिर में तोड़फोड़ की गई।

• न केवल सिंधी हिंदू यदि हम अल्पसंख्यकों में सिखों की बात करें तो अभी हाल ही में सिख लड़की को अगवा कर जबरन मुस्लिम युवक से निकाह करवाने का मामला सामने आया है। यह घटना पाकिस्तान के ननकाना साहिब की है जहां जबरन 27 अगस्त को 19 वर्षीय जगजीत कौर को अगवा किया।

इस प्रकार देखा जाए सिंध पाकिस्तान में सिंधी हिंदू, सिख सभी से अल्पसंख्यक होने के कारण दुर्व्यवहार किया जा रहा है जबकि भारत की बात करें जिस प्रकार पाकिस्तान से जो भी सिंधी हिंदू यहां आए और अपने नए जीवन की शुरुआत की तो सभी ने उनकी सहायता की तथा आज तक कोई भी उनसे अल्पसंख्यकों की तरह दुर्व्यवहार नहीं किया गया वह यहां पर पूरी तरह सुरक्षित है तथा प्रगतिशील है।

References (सन्दर्भ सूची)

- सिन्ध का इतिहास – मोहन गेहाणी
- The Indus Empire (History of Sindh) Prem Matlani
- Sindhi Culture Dr. U.T. Thakur, Page No. 31
- National Integration of Sindhis – SUBHADRA ANAND Page No.51-53.
- Judith T – Shuval "Migration and Stress"
- Victor Barnow, "Social structure of Sindhi Refugee Community.
- दैनिक भास्कर, अजमेर 8 अप्रैल 2016 P.No. 8
- Bharat Discovery. Org > india >
- N.D.T.V. News 19 Sepetember
- सर्वेक्षण सूचियां (अजमेर क्षेत्र)